• ध्यान दें...

अक्षय तृतीया के दिन न करें ये 7 काम...

सनातन धर्म में अक्षय तृतीया का दिन बेहद शुभ माना जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि हर तरह के मांगलिक कार्य को करने के लिए अक्षय तृतीया का दिन बेहद शुभ है। यह एक ऐसी तिथि है जिसका कभी क्षय नहीं होता है अर्थात जो कभी खत्म नहीं होता है। इस दिन किये गए शुभ कार्यों का परिणाम भी कई गुना बढ़कर मिलता है। मगर ऐसे कुछ काम भी हैं जिन्हें अक्षय तृतीया के दिन न करने की सलाह दी जाती है। इस लेख के माध्यम से जानते हैं कि अक्षय तृतीया के दिन कौन से काम भूल के भी नहीं करने चाहिए वरना लक्ष्मी माता नाराज हो सकती हैं।

- अक्षय तृतीया के दिन सोना खरीदना शुभ माना जाता है। यदि किसी कारण से आप सोने से बनी वास्तु नहीं खरीद पते हैं तो आप अपनी क्षमता के अनुसार किसी दूसरी धातु से बना सामान खरीद लें।
- इस दिन जनेऊ धारण करने की मनाही होती है। कुछ स्थानों पर इस दिन यात्रा न करने की सलाह दी जाती है।
- अक्षय तृतीया के दिन अपने

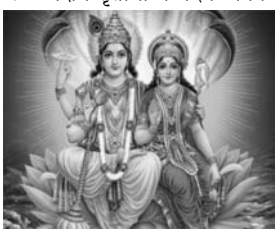

मन में किसी भी व्यक्ति के लिए गलत भावना न रखें। अपना मन साफ रखें। इस दिन क्रोध करने से बचें। जिस व्यक्ति के मन में छल-कपट होता है मां लक्ष्मी उनके पास नहीं ठहरती हैं।

अस्वच्छ वातावरण में न रहें

अक्षय तृतीया एक विशेष संयोग वाली तिथि है। इस दिन स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। घर के साथ साथ पूजाघर को अवश्य साफ करें।

- भगवान विष्णु की पूजा में तुलसी प्रसाद के रूप में इस्तेमाल होती है। अक्षय तृतीया के दिन लक्ष्मी माता के साथ जब भगवान विष्णु की आराधना करें तब तुलसी अवश्य चढाएं। मगर इस बात का ख्याल रखें कि आप तुलसी दल स्नान करके और स्वच्छ वस्त्र धारण करके ही तोड़ें। ऐसा न करने पर अशुभ फल मिल सकता है।
- अक्षय तृतीया के दिन भगवान विष्णु और उनकी पत्नी माता लक्ष्मी की अलग अलग पूजा करने से बचना चाहिए। इस दिन जातक इनकी एकसाथ पूजा करें। इससे साधक को अक्षय पुण्य के साथ समृद्धि और सौभाग्य का आशीर्वाद मिलता है।

• इस माह...

जल दान करें...

वैशाख मास को सभी मास में उत्तम बताया गया है। विशाखा नक्षत्र से संबंध रखने के कारण इस माह को वैशाख कहा गया। इस मास के देवता भगवान मधुसूदन हैं। इस माह भगवान विष्णु, भगवान परशुराम और देवी मां की उपासना की जाती है। यह माह धर्म, यज्ञ और तपस्या का सार माना जाता है। इस माह जलदान का विशेष महत्व है। वैशाख माह में पवित्र नदियों में सूर्योदय से पहले स्नान कर भगवान श्री हरि विष्णु के नाम का स्मरण करने से अतुलनीय पुण्य प्राप्त होता है। इस माह प्रतिदिन सूर्यदेव को जल का अर्घ्य अर्पित करें। विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें। इस माह पेड़-पौधों की सेवा करें। इस माह एक ही समय भोजन करें। पूर्वजों के नाम पर प्याऊ लगवाएं। पशु-पक्षियों के लिए जल की व्यवस्था करें। इस माह भगवान विष्णु के साथ मां लक्ष्मी की आराधना करें। कमल का पुष्प मां लक्ष्मी को अर्पित करें। इस माह तेल मालिश, दिन में सोना, दो बार भोजन करना, सूर्यास्त के बाद भोजन करना वर्जित माना गया है। इस माह अक्षय तृतीया का त्योहार मनाया जाता है। श्री बद्रीनाथधाम के कपाट अक्षय तृतीया को ही खुलते हैं। इस माह शुक्ल पक्ष की नवमी को माता सीता धरती से प्रकट हुई। मान्यताओं के अनुसार त्रेतायुग का आरंभ भी वैशाख माह से हुआ। वैशाख शुक्ल पक्ष की द्वितीया को पुरी में भगवान जगन्नाथ रथयात्रा आयोजित होती है। वैशाख पूर्णिमा को ब्रह्मा जी ने श्वेत तथा कृष्ण तिलों का निर्माण किया था। इस दिन दोनों प्रकार के तिलों से युक्त जल से स्नान करें, अग्नि में तिलों की आहुति दें। इस माह शुक्ल पक्ष एकादशी को मोहिनी एकादशी का व्रत किया जाता है। यह व्रत रखने वाला विष्णु लोक में स्थान प्राप्त करता है। वैशाख माह में तीर्थ में स्नान करने, पितरों को तर्पण करने का विशेष महत्व है।

सिंदूर के उपाय

वास्तु के लिहाज से सिंदूर का विशेष महत्व है। सिंदूर हर सुहागन स्त्री के शृंगार का अहम हिस्सा है। सुहागन स्त्री सिंदूर से अपनी मांग भरती है। शास्त्रों में कहा गया है कि स्त्री के सिंदूर लगाने से उसके पति की आयु लंबी होती है। रोगों से उसकी रक्षा होती है। हर रोज सूर्यदेव को अर्घ्य देते समय थोड़ा सा सिंदूर जल में मिला लें। अपने घर के दरवाजे पर सिंदूर से स्वास्तिक के निशान बना दें। ऐसा करने से घर में सुख शांति बनी रहती है। जिन घर में पति-पत्नी में अक्सर झगड़ा होता है, उन्हें इस उपाय को अवश्य आजमाना चाहिए। माना जाता है कि घर के मुख्य दरवाजे पर तेल में सिंदूर मिलाकर लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं होता। ऐसा लगातार 40 दिन करने से घर में मौजूद वास्तुदोष दूर हो जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार देवी-देवताओं की पूजा भी बिना सिंदूर अधूरी होती है। धन की हानि हो रही है तो ऐसी समस्याओं को दूर करने के लिए पांच मंगलवार और शनिवार तक चमेली के तेल में सिंदूर मिलाकर हनुमान जी को चढ़ाएं। चमेली के तेल में सिंदूर मिलाकर हनुमान जी को अर्पित करें। ऐसा करने से कारोबार में उन्नति होगी।

परशुराम का जन्म

परशुराम जी को भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है जिन्होंने क्रूर क्षत्रियों के अत्याचारों से रक्षा के लिए जन्म लिया।

जानते हैं इस साल भगवान परशुराम की जयंती किस दिन मनायी जाएगी और शुभ मुहूर्त तथा पूजा विधि क्या है। परशुराम जयंती 2021 तिथि और शुभ मुहूर्त भगवान परशुराम की जयंती 14 मई 2021 शुक्रवार को मनाई जाएगी...

हिंदू धर्म के मानने वाले लोगों के लिए परशुराम जयंती काफी महत्व रखती है। पंचांग के अनुसार वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के दिन परशुराम जयंती मनायी जाती है। इसी दिन अक्षय तृतीया का उत्सव पूरे देश में मनाया जाता है। इस दिन कई स्थानों पर भगवान परशुराम के नाम पर शोभायात्रा निकालने की परंपरा है। परशुराम जी को भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है जिन्होंने क्रूर क्षत्रियों के अत्याचारों से रक्षा के लिए जन्म लिया। जानते हैं इस साल भगवान परशुराम की जयंती किस दिन मनायी जाएगी और शुभ मुहूर्त तथा पूजा विधि क्या है। परशुराम जयंती 2021 तिथि और शुभ मुहूर्त भगवान परशुराम की जयंती 14 मई 2021 शुक्रवार को मनाई जाएगी।

तृतीया तिथि प्रारंभ : 14 मई 2021 सुबह 05 बजकर 40 मिनट पर

तृतीया तिथि की समाप्ति : 15 मई 2021 सुबह 08 बजे

परशुराम जयंती पूजा विधि : इस दिन भक्त सूर्योदय से पहले पवित्र स्नान कर लें। स्नान करने के बाद साफ वस्त्र धारण करें। जातक पूजा करें और भगवान विष्णु को चंदन, तुलसी के पत्ते, कुमकुम, अगरबत्ती, फूल और मिठाई चढ़ाएं। इस दिन परशुराम जयंती का व्रत रखना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन उपवास करने से भक्तों को पुत्र की प्राप्ति होती है। उपवास रखने वाले जातक इस दिन दाल या अनाज का सेवन न करें। केवल दूध उत्पादों और फलों का सेवन ही करें।

हरिवंश पुराण के अनुसार, कार्तवीर्य अर्जुन नाम का एक राजा था जो महिष्मती नगरी पर शासन करता था। वह और अन्य क्षत्रिय कई विनाशकारी कार्यों में लिप्त थे, जिससे अन्य लोगों का जीवन कठिन हो गया था। इस सब से व्यथित होकर, देवी पृथ्वी ने भगवान विष्णु से पृथ्वी और जीवित प्राणियों को क्षत्रियों की क्रूरता से बचाने के लिए मदद मांगी। देवी पृथ्वी की सहायता करने के लिए, भगवान विष्णु ने परशुराम के नाम से रेणुका और जमदग्नि के पुत्र के रूप में अवतार लिया। उन्होंने कार्तवीर्य अर्जुन तथा सभी क्षत्रियों का वध कर दिया और पृथ्वी को उनकी क्रूरता से मुक्त कराया।

• वास्तु...

घर में प्रवेश नहीं कर पाएंगे रोग...

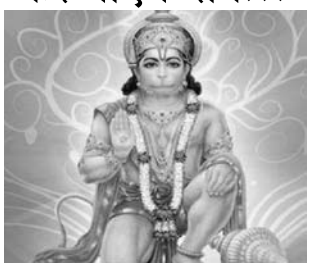

घर में स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बनी रहती है तो इसका कारण वास्तुदोष हो सकता है। घर के मुख्य द्वार से ही नकारात्मकता घर में प्रवेश करती है। ऐसे में घर के मुख्य द्वार पर सफाई का विशेष ध्यान रखें। घर का मुख्य द्वार टूटा-फूटा नहीं होना चाहिए, इससे घर के सदस्यों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। घर के कोनों और दीवारों पर मकड़ी के जाले न हों। यह मानसिक तनाव बढ़ाता है। घर के मुख्य गेट पर रोजाना स्वास्तिक बनाएं। भवन के प्रवेशद्वार पर संगीतमय घंटियां लगाएं। घर का मध्य भाग खाली रखें। बीम के नीचे कभी नहीं सोएं। जरूरतमंदों को दान दें। अच्छी नींद जरूर लें। सोते समय सिर दक्षिण दिशा की तरफ हो और पैर उत्तर की तरफ। हर शनिवार काले उड़द और सरसों के तेल का दान करें। पवित्र भावना से हनुमान चालीसा का पाठ करने से हनुमानजी की कृपा प्राप्त होती है। जो हमें हर तरह की अनहोनी से बचाती है। घर की दक्षिण दिशा में हनुमान जी का चित्र लगाएं। वास्तु दोष को दूर करने के लिए घर में नौ दिन तक अखंड रामायण का पाठ कराएं। प्रतिदिन सुबह और शाम घर में कर्पूर जरूर जलाएं। घर में कांटेदार पौधे कभी न लगाएं। कमरों में प्राकृतिक रोशनी और हवा आने दें।

• जलाएं घी का दीया...

प्राचीन समय से अपने परिवार के कुल देवी या देवता के सामने दीपक जलाने की प्रथा चली आ रही है। जहां कुछ लोग शाम के समय दिया जलाना सही मानते हैं तो वहीं कई लोग सुबह के समय दिया जलाना शुभ समझते हैं। हमारे लिए मेहमान भगवान के समान होता है। उनका पूरा मान सम्मान हमें करना चाहिए। जब कोई व्यक्ति हमारे घर आए उसे सबसे पहले पानी देना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि किसी प्यासे की दुआ सबसे ज्यादा शक्तिशाली होती है। इसलिए घर आए मेहमान को पानी दें और उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।